بسم الله الرحمن الرحيم

खाना खिलाने की फ़ज़ीलत का बयान

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत का एक अज़ीम नायाब रिसाला

رادُّ القحط والوباء بدعوة الجيران ومواساة الفقراء

यानी

महमान नवाज़ी

के फ़ज़ाइल

आला हज़रत
इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

नाशिर :- मकतबतुल मदीना

मेमन वाडा रोड़ मीनारा मस्जिद, मुम्बई

Scanned by CamScanner

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD "ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

Scanned by CamScanner

ग़रीबों मोहताजों, पड़ोसियों व रिश्तेदारों. और दोस्त व एहबाब की दावत करने की फ़ज़ीलत का बयान

رَدُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَا بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء

यानी

मेहमान नवाज़ी के फ़ज़ाएल

मुसन्निफ़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ क़ादरी बरेलवी

नाशिर :- मकतबतुल मदीना

मेमन वाड़ा रोड़ मीनारा मस्जिद, मुम्बई

Scanned by CamScanner

اِزَالَةُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ

١٣١٢ ھ

क़हेत और बला को दूर करने वाला पड़ोसियों की दावत और मोहताजों की ग़मगुसारी के ज़रीये

इस्तिफ़ता (सवाल)

अज़ :- कानपूर फ़ैज़े आम, मुर्सिला मौलवी अहमदुल्लाह शागिर्द मौलवी अहमद हसन साहब 17 रबीउल आख़िर शरीफ़ 1312 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं ओलमा-ए-दीन व मुफ़्तीयाने शरअे मतीन इस मस्अले में के हमारे शहर कानपूर में इस तरह का (एक) रिवाज है के कोई बला व हैज़ा, चेचक और क़हेत (आकाल, सूखा) वग़ैरा आ जाए तो उस बला को दूर करने के वासते तमाम महल्ले वाले मिल कर अल्लाह की राह में अपनी अपनी हैसियत के मुताबिक चावल, गेहू, व पैसा वग़ैरा उठा कर खाना पकाते हैं, और मौलविओं को और मुल्लाओं को भी दावत कर के उन लोगों को भी खाना खिलाते हैं, और तमाम महल्ले वाले भी खाते हैं------क्या इस सूरत में महल्ले वालों को पका हुआ खाना, खाना जाइज़ होगा या न ?------इस पके हुए खाने को खाने से रोकने वाले और न रोकने वाले पर क्या हुक्म दिया जाता है ?—بَيِّنُوْا تُوْجَرُوْا—

अलजवाब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ وَضَعَ الْبَرَكَةَ فِىْ جَمَاعَةِ الْاِخْوَانِ ؛ وَ
قَطَعَ الْهَلَكَةَ بِتَوَاصُلِ الْاَحِبَّاءِ وَالْجِيْرَانِ ؛ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
عَلٰى صَاحِبِ الشَّفَاعَةِ ؛ مُجِيْبِ الدَّعْوَةِ ؛ وَمُحِبِّ الْجَمَاعَةِ

دَافِعِ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ وَالْقَحْطِ وَالْمَجَاعَةِ ؛ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَجَمَاعَةِ الْمُسْلِمِيْنَ ؛ وَعَلَيْنَا فِيْهِمْ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ؛ اٰمِيْن اٰمِيْن اٰمِيْن يَا رَبَّنَا اٰمِيْن ؛ ———

———

——— इस काम में यानी खाना खिलाने का अ़मल जो सवाल में बयान किये गए वक़ुअे के मुताबिक़ हर दावत वाले को वोह खाना, खाना शरअ़न (शरीअ़त में) जाइज़ व बेहतर हैं। जिस के मना होने में शरीअ़ते मुत्तहरा में हरगिज़ कोई दलील नहीं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है....................

" لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا۔ "

(तुम पर कुछ गुनाह नहीं के खाओ मिल कर या अलग अलग)

तो शरीअ़त के मना किए बग़ैर इस काम को मना करना जहालत व जुर्अ़त (बि बाकी) हैं।

وَاَنَا اَقُوْلُ وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق— नज़र कीजिए तो येह अमल चन्द दवाओं का मुकम्मल नुस्ख़ा हैं के इस से मसाक़ीन (ग़रीब ग़ुरबा) व फ़ुक़रा भी खाएगे, ओ़लमा व नेक हज़रात भी अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार भी, क़रीब व आस पास के महल्ले वाले भी, तो इस में जन्नत के दरवाज़ों की तादाद के मुताबिक़ आठ ख़ूबियॉ हैं।

1. सदक़ा करने की फ़ज़ीलत।
2. लोगों की ख़िदमत।
3. आपस में रिश्ता जोड़ना।
4. पड़ोसी की हमदर्दी व ग़म ख़्वारी।
5. मुसलमानों से नेक सुलूक़ ख़ुसूसन ग़रीबों का दिल ख़ूश करना।
6. उन की पसंदिदह चीज़ें उन के लिए जमा करना।
7. मुसलमान भाईयों को खाना देना।
8. मुसलमानों का खाने पर एक जगह जमा होना और उन सब कामों को नेक नियत के साथ अल्लाह की रज़ा और ख़ुदा से अपने—

Scanned by CamScanner

—गुनाहों की मुआफ़ी माँगना व बलाओं के दूर करने का ज़रीया है।

ज़ाहिर है के क़हेत (आकाल) वबा, हर मुसीबत व बला गुनाहों से आती हैं।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है.........................

وَمَا اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ۔

और तुम्हें जो मुसीबत पहुँची वोह उस के सबब है जो तम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।

तो इस तरह के काम मग़फ़ेरत व रज़ा व रहमत हासिल करने में बेशक इस के उम्दह ईलाज हैं। अब अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से हदीसें सुनिये।

हदीस 1 हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुल मुर्सलीन صلى الله عليه وسلم फ़रमाते हैं.........................

"اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ"

बेशक सदक़ा रब —عزوجل— के ग़ज़ब को बुझता और बुरी मौत को दूर करता है। —رواه الترمذی وحسنه وابن حبان فی صحیحه عن انس بن مالك رضی الله تعالیٰ عنه—

हदीस 2 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلی الله تعالیٰ علیه وسلم—

اِتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَاِنَّهَا تُقِيْمُ الْعِوَجَ وَتَدْفَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ۔ الحديث

दोज़ख़ से बचो अगरचे अधा छूहारा (खजूर) दे कर के वोह टेड़े पन को सीधा और बुरी मौत को दूर कर देता है।

—رواه ابو یعلیٰ والبزار عن الصدیق الاکبر رضی الله تعالیٰ عنه—

हदीस 3 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلی الله تعالیٰ علیه وسلم—

—اِنَّ صَدَقَةَ الْمُسْلِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ وَتَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ—

Scanned by CamScanner

बेशक मुसलमान का सदक़ा उम्र को बड़ाता और बुरी मौत को मना करता है ।

رواہ الطبرانی و ابوبکر بن مقیم فی جزئہ عن عمرو بن عوف

हदीस 4-5 के फ़रमाते हैं हुज़ूर — صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم -----

—— اَلصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيْئَةَ وَتَقِيْ مِيْتَةَ السُّوْءِ ——

सदक़ा गुनाह को बुझाता हैं, और बुरी मौत से बचाता है ।

—رواہ الطبرانی فی الکبیر عن رافع بن مکیث الرضوانی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

दूसरी रिवायत में हैं...

—اَلصَّدَقَةُ تَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ सदक़ा बुरी मौत को रोकता है ।

हदीस 6 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم --------

—— اِنَّ اللّٰهَ لَيَدْرَءُ بِالصَّدَقَةِ سَبْعِيْنَ بَابًا مِّنْ مِّيْتَةِ السُّوْءِ

बेशक अल्लाह— عزوجل सदक़े के सबब से सत्तर दरवाज़े बुरी मौत के दूर फ़रमा देता है ।

رواہ الامام عبد اللہ بن مبارک فی کتاب البر عن انس بن مالک

हदीस 7 के फ़रमाते हैं हुज़ूर— صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ------

—— اَلصَّدَقَةُ تَسُدُّ سَبْعِيْنَ بَابًا مِّنَ السُّوْءِ ——

सदक़ा सत्तर दरवाज़े बुराई के बन्द करता है ।

हदीस 8 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم -----

اَلصَّدَقَةُ تَمْنَعُ سَبْعِيْنَ نَوْعًا مِّنْ اَنْوَاعِ الْبَلَاءِ۔ اَهْوَنُهَا— اَلْجُذَامُ وَالْبَرَصُ ——

सदक़ा सत्तर बला को रोकता हैं, जिन की आसान तर बदन बिगड़ना और सफ़ेद दाग़ हैं ।

وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی —— رواہ الخطیب عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ

हदीस 9-10 के फ़रमाते हैं हुज़ूर— صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم -----

— بَاكِرُوْا بِالصَّدَقَةِ فَاِنَّ الْبَلَاءَ لَا يَتَخَطَّاهَا ——

सुबह तड़के सदक़ा दो के बला सदक़े से आगे क़दम नहीं बड़ाती ।

Scanned by CamScanner

हदीस 11 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

اَلصَّدَقَاتُ بِالْغَدَوَاتِ يُذْهِبْنَ الْعَاهَاتِ सुबह के सदके आफतों को दूर कर देते है ।

رواہ الدیلمی عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ

हदीस 12 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

اَلصَّدَقَةُ تَمْنَعُ الْقَضَاءَ السُّوْءَ सदक़ा बुरी मौत को टाल देता है ।

رواہ ابن عساکر عن جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ

हदीस 13 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

صِلُوا الَّذِیْ بَیْنَکُمْ وَبَیْنَ رَبِّکُمْ بِکَثْرَةِ ذِکْرِکُمْ لَهٗ وَکَثْرَةِ الصَّدَقَةِ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِیَةِ تُرْزَقُوْا وَتُنْصَرُوْا وَتُجْبَرُوْا

رواہ عنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

अल्लाह عزوجل के साथ अपना तअ़ल्लुक़ दुरूस्त करो उस की याद बहुत ज़्यादा और छुप कर व ज़ाहिर करो, सदक़े ज़्यादा दो ऐसा करोगे तो रोज़ी और मद्द दिये जाओगे, तुम्हारी परेशानियॉ दूर की जाएगी ।

हदीस 14 से 17 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

اَلصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِیْئَةَ کَمَا یُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ

सदक़ा गुनाह को बुझा देता है जैसे आग पनी को ।

رواہ الترمذی وقال حسن صحیح عن معاذ بن جبل ونحوہ ابن حبان فی صحیحہ عن کعب بن عجرۃ وکابی یعلی بسند صحیح عن جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہم وابن المبارک عن عکرمۃ مرسلا بسند حسن

हदीस 18 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

مَثَلُ الْمُؤْمِنِ وَمَثَلُ الْاِیْمَانِ کَمَثَلِ الْفَرَسِ فِیْ اٰخِیَّتِهٖ یَجُوْلُ ثُمَّ یَرْجِعُ اِلٰی اٰخِیَّتِهٖ وَاِنَّ

मुसलमान और ईमान की कहावत ऐसी हैं जैसे चरागाह में घोड़ा अपनी रस्सी से बन्धा हुआ हो के चारो तरफ़ चर कर फिर अपनी रस्सी की तरफ़

اَلْمُؤْمِنَ يَسْهُوْ ثُمَّ يَرْجِعُ اِلَى الْاِيْمَانِ فَاَطْعِمُوْا طَعَامَكُمْ الْاَتْقِيَاءَ وَاَتُوْا مَعْرُوْفَكُمْ الْمُؤْمِنِيْنَ۔

पलट आता है, यूँ ही मुसलमान से भूल हो जाती है फिर ईमान की तरफ़ पलट आता हैं, तो अपना खाना परहेज़गारों को खिलाओं, और अपना नेक सुलूक़ सब मुसलमानों को दो ।

—रواه البيهقي في شعب الايمان وابونعيم في الحلية عن ابي سعيد الخدري رضی اللہ تعالیٰ عنہ—

–इस हदीस से ज़ाहिर के गुनाहों के ईलाज के लिए नेकों को खाना खिलाना और आ़म मुसलमानों के साथ अच्छा सुलूक़ करना चाहिये ।

हदीस 19 के फ़रमाते हैं हुज़ूर—صلے اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—

اِنَّ الصَّدَقَةَ وَصِلَةَ الرَّحِمِ يَزِيْدُ اللّٰهُ بِهِمَا فِي الْعُمُرِ وَيَدْفَعُ بِهِمَا مِيْتَةَ السُّوْءِ وَيَدْفَعُ بِهِمَا الْمَكْرُوْهَ وَالْمَحْذُوْرَ۔

बेशक सदक़ा और नेक सुलूक़ इन दोनों से अल्लाह तआला उ़मर बड़ाता हैं, और बुरी मौत को दूर फ़रमाता है और बुराई व ड़र को दूर करता हैं ।

—رواه ابو يعلى عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔—

हदीस 20 के फ़रमाते हैं हुज़ूर—صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—

مَنْ اَحَبَّ اَنْ يُبْسَطَ لَهٗ فِيْ رِزْقِهٖ وَيُنْسَاَ لَهٗ فِيْ اَثَرِهٖ فَلْيَصِلْ رَحِمَهٗ

जो चाहता हैं के उस का रिज़्क़ (रोज़ी) ज़्यादा हो, और माल में बरकत हो वोह अपने रिश्तेदारों से नेक सुलूक़ करें ।

—رواه البخاري عن ابي هريرة رضی اللہ تعالیٰ عنہ—

हदीस 21-22 के फ़रमाते हैं हुज़ूर—صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—

—مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّمَدَّ لَهٗ فِيْ عُمُرِهٖ وَيُوَسَّعَ لَهٗ فِيْ رِزْقِهٖ—

وَيُدْفَعَ عَنْهُ مِيْتَةَ السُّوْءِ فَلْيَتَّقِ اللّٰهَ وَلْيَصِلْ رَحِمَهٗ—

जिस की ख़्वाहिश हो के उस की उ़म्र ज़्यादा और रोज़ी ज़्यादा हो और बुरी मौत दूर हो जाए वोह अल्लाह से ड़रे और अपने रिश्तेदारों

Scanned by CamScanner

से नेक सुलूक करे ।

—— رواہ عبداللہ بن الامام فی زوائد المسند والبزار بسند جید والحاکم فی المستدرک عن امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ والحاکم نحوہ فی حدیث عن عقبۃ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ——

हदीस 23 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم——

صِلَةُ الْقَرَابَةِ مَثْرَاةٌ فِي الْمَالِ مَحَبَّةٌ فِي الْأَهْلِ مَنْسَأَةٌ فِي الْأَجَلِ

क़रीबी रिश्तेदारों से नेक सुलूक, माल का बहुत बड़ाने वाला आपस में मुहब्बत दिलाने वाला, उम्र का ज़्यादा करने वाला है ।

—— رواہ الطبرانی بسند صحیح عن عمرو بن سہل رضی اللہ تعالیٰ عنہ ——

हदीस 24 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم-----

—صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ रिश्तेदारों से नेक सुलूक करने से उम्र बड़ती है ।

—— رواہ القضاعی عن ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ ——

हदीस 25 के फ़रमाते हैं हुज़ूर-صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم-------

إِنَّ أَعْجَلَ الْبِرِّ ثَوَابًا صِلَةُ الرَّحِمِ حَتّٰى أَنَّ أَهْلَ الْبَيْتِ يَكُوْنُ فَجَرَةً فَتَنْمُوْا أَمْوَالُهُمْ وَيَكْثُرُ عَدَدُهُمْ إِذَا تَوَاصَلُوْا ——

बेशक सब नेकियों में जल्द तर सवाब मिलने वाला रिश्तेदारों से नेक सुलूक है के घर वाले फ़ासिक़ होते हैं उन के माल तरक़्क़ी करते हैं और उन के शुमार बड़ते हैं जब आपस में नेक सुलूक करें ।

—— رواہ الطبرانی عن ابی بکرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ——

दूसरी रिवायत में इत्ना और ज़्यादा है................

—وَمَا مِنْ أَهْلِ بَيْتٍ يَتَوَاصَلُوْنَ فَيَحْتَاجُوْنَ कोई घर वाले ऐसे नहीं के आपस में नेक सुलूक करे फिर मोहताज हो जाएँ ।

—— رواہ ابن حبان فی صحیحہ ——

Scanned by CamScanner

हदीस 26 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم --------

صِلَةُ الرَّحِمِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ وَحُسْنُ الْجِوَارِ يُعَمِّرْنَ الدِّيَارَ ←
وَيَزِدْنَ فِي الْأَعْمَارِ — रिश्तेदारों से नेक सुलूक और नेक आ़दतें और पड़ोसी से नेक सुलूक शहरों को आबाद और उ़मरों को ज़्यादा करते हैं।

رَوَاهُ الْإِمَامُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِي فِي الشُّعَبِ بِسَنَدٍ صَحِيحٍ عَلَىٰ أُصُولِنَا عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ الصِّدِّيقَةِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَىٰ عَنْهَا ـــــــ

हदीस 27 के फ़रमाते हैं हुज़ूर — صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ------

صَنَائِعُ الْمَعْرُوفِ تَقِي مَصَارِعَ السُّوءِ وَالْآفَاتِ وَالْهَلَكَاتِ وَأَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الدُّنْيَا هُمْ أَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الْآخِرَةِ ـــــ

नेक सुलूक के काम बुरी मौतों, आफ़तों हलाकतों से बचाते हैं और दुनिया में एहसान वाले वही आखिरत में एहसान वाले होंगे।

हदीस 28 के फ़रमाते हैं हुज़ूर- صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ------

صَنَائِعُ الْمَعْرُوفِ تَقِي مَصَارِعَ السُّوءِ وَالصَّدَقَةُ خَفِيًّا تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَصِلَةُ الرَّحِمِ زِيَادَةٌ فِي الْعُمْرِ وَكُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ ـــــ وَأَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الدُّنْيَا هُمْ أَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الْآخِرَةِ وَأَهْلُ الْمُنْكَرِ فِي الدُّنْيَا هُمْ أَهْلُ الْمُنْكَرِ فِي الْآخِرَةِ ـــــ وَأَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ أَهْلُ الْمَعْرُوفِ ـــــ

भलाईयों के काम बुरी आफ़तों से बचाते हैं और छुपा कर ख़ैरात करना रब के ग़ज़ब को बुझाता है और रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उम्र में बरकत हैं और हर नेक सुलूक (कुछ हो किसी के साथ हो) सब सदक़ा हैं और दुनिया में एहसान वाले वही आख़िरत में एहसान पाऐंगे और दुनिया में बदी वाले वही आख़िरत में बदी देखेंगे और सब में पहले जो जन्नत में जाएगे वोह नेक बरताओं वाले होंगे।

رواه الطبرانی فی الاوسط عن ام المومنین ام سلمة رضی الله تعالیٰ عنها

हदीस 29 के फ़रमाते हैं हुज़ूर- صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم --------

Scanned by CamScanner

اِنَّ مِنْ مُوْجِبَاتِ الْمَغْفِرَةِ اِدْخَالُكَ السُّرُوْرَ عَلٰی اَخِیْكَ الْمُسْلِمِ

बेशक मग़फ़ेरत वाजिब कर देने वाली चीज़ों में हैं तेरा अपने भाई मुसलमान का जी ख़ूश करना।- رواہ الطبرانی فی الکبیر والوسیط — عن الامام بن الامام سیدنا الحسن بن علی کرم اللہ تعالٰی وجوھھما۔

हदीस 30 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ---------

اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللہِ تَعَالٰی بَعْدَ الْفَرَائِضِ اِدْخَالُ السُّرُوْرِ عَلَی الْمُسْلِمِ

———अल्लाह तआला को फ़र्ज़ो के बाद सब आमाल से ज़्यादा प्यारा मुसलमान का जी ख़ूश करना हैं।

——— فیھما عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما ———

हदीस 31से33 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ----

اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ اِدْخَالُ السُّرُوْرِ عَلَی الْمُؤْمِنِ، کَسَوْتَ عَوْرَتَہٗ اَوْ اَشْبَعْتَ جَوْعَتَہٗ اَوْ قَضَیْتَ لَہٗ حَاجَتَہٗ ———

सब से अफ़ज़ल काम मुसलमान का जी ख़ूश करना हैं के तू उस का बदन ढ़ाके या भूक में पेट भरे या उस का काम पूरा करे।

——— رواہ فی الاوسط عن امیر المومنین عمر الفاروق الاعظم و نحوہ ابو الشیخ فی الثواب والاصبھانی فی حدیث عن ابنہ عبد اللہ وابن ابی الدنیا عن بعض اصحاب النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ———

हदीस 34 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم -------

مَنْ وَافَقَ مِنْ اَخِیْہِ شَھْوَۃً غُفِرَ لَہٗ ———

यानी जिस मुसलमान का जी किसी खाने पीने या किसी क़िस्म की हलाल चीज़ को चाहता हो, और इत्तेफ़ाक़ से दूसरा उसे वोही चीज़ खिला दे अल्लाह عزوجل उस की मग़फ़ेरत कर दे। رواہ العقیلی والبزار والطبرانی فی الکبیر عن ابی الدرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ ولہ شواھد فی الاولٰی ———

हदीस 35 के फ़रमाते हैं हुज़ूर- صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

مَنْ اَطْعَمَ اَخَاہُ الْمُسْلِمَ شَھْوَتَہٗ حَرَّمَہُ اللہُ عَلَی النَّارِ ———

जो अपने मुसलमान भाई को उस की चाहत की चीज़ खिलाए

Scanned by CamScanner

अल्लाह तआ़ला उसे दोज़ख़ पर हराम कर दे ।

رواه البيهقي في شعب الايمان عن ابي هريرة رضي الله تعالى عنه

हदीस 36 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم ———

مِنْ مُوْجِبَاتِ الرَّحْمَةِ إِطْعَامُ الْمُسْلِمِ الْمِسْكِيْنِ ———

रहमते ईलाही वाजिब कर देने वाली चीज़ों में है ग़रीब मुसलमान को खाना खिलाना । ——— رواه الحاكم وصححه

ونحوه البيهقي وابو الشيخ في الثواب عن جابر رضي الله تعالى عنه ـ

हदीस 37से46 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم ———

اَلدَّرَجَاتُ إِفْشَاءُ السَّلَامِ وَإِطْعَامُ الطَّعَامِ وَالصَّلٰوةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ

—यानी अल्लाह —عزوجل— के यहाँ दरजे बुलन्द करने वाले हैं सलाम फैलाना और हर तरह के लोगों को खाना खिलाना और रात को लोगों के सोते में नमाज़ पढ़ना ।

हदीस 47 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم ———

اَلْكَفَّارَاتُ إِطْعَامُ الطَّعَامِ وَإِفْشَاءُ السَّلَامِ وَالصَّلٰوةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ

-गुनाह मिटाने वाले है खाना खिलाना, और सलाम करना और रात को लोगों के सोते में नमाज़ पढ़ना ।

हदीस 48 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلى الله تعالى عليه وسلم———

مَنْ أَطْعَمَ أَخَاهُ حَتّٰى يُشْبِعَهُ وَسَقَاهُ مِنَ الْمَاءِ حَتّٰى يُرْوِيَهُ بَاعَدَهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ سَبْعَ خَنَادِقَ مَا بَيْنَ كُلِّ خَنْدَقَيْنِ مَسِيْرَةُ خَمْسِ مِاءَةِ عَامٍ ———

जो अपने मुसलमान भाई को पेट भर खाना खिलाए प्यास भर पानी पिलाए अल्लाह तआ़ला उसे दोज़ख़ से सात खाईयाँ दूर करें, हर खाई से दूसरी खाई तक पाँच सौ बरस की राह हैं ।

رواه الطبراني في الكبير وابو الشيخ في الثواب والحاكم مصححا سنده والبيهقي عن ابن عمر رضي الله تعالى عنهما ———

हदीस 49 के फ़रमाते हैं हुज़ूर —صلى الله تعالى عليه وسلم———

Scanned by CamScanner

إِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِيْ مَلٰئِكَتَهٗ بِالَّذِيْنَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ مِنْ عَبِيْدِهٖ अल्लाह तआला अपने बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं अपने फ़रिश्तों के साथ मुबाहात (फ़ख़्र) फ़रमाता हैं (के देखो फ़ज़ीलत इसे कहते है) — رواه ابو الشيخ عن الحسن البصرى مرسلا

हदीस 50-51 के फ़रमाते हैं हुज़ूर — صلى الله تعالىٰ عليه وسلم

اَلْخَيْرُ اَسْرَعُ اِلَى الْبَيْتِ الَّذِيْ يُؤْكَلُ فِيْهِ مِنَ الشَّفْرَةِ اِلٰى سَنَامِ الْبَعِيْرِ

ख़ैर व बरकत उस घर की तरफ़ जिस में लोगों को खाना खिलाया जाए उस से भी ज़्यादा जल्द पहुँचती है जित्नी जल्द छुरी कोहाने शुतर (के उॅंट ज़बह कर के सब से पहले उस के कोहान ही छिलते है)।

— رواه ابن ماجة عن ابن عباس وابن ابى الدنيا عن انس رضى الله تعالىٰ عنهم —

हदीस 52 के फ़रमाते हैं हुज़ूर — صلى الله تعالىٰ عليه وسلم

اَلْمَلٰئِكَةُ تُصَلِّيْ عَلٰى اَحَدِكُمْ مَا دَامَتْ مَائِدَتُهٗ مَوْضُوْعَةً — जब तक तुम में किसी का दसतर ख़्वान बिछा हैं उतनी देर फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं।

— رواه الاصبهانى عن ام المومنين الصديقة رضى الله تعالىٰ عنها —

हदीस 53 के फ़रमाते हैं हुज़ूर — صلى الله تعالىٰ عليه وسلم

اَلضَّيْفُ يَاْتِيْ بِرِزْقِهٖ وَيَرْتَحِلُ بِذُنُوْبِ الْقَوْمِ يُمَحِّصُ عَنْهُمْ ذُنُوْبَهُمْ — मेहमान अपना रिज़्क़ ले कर आता है और खिलाने वालों के गुनाह ले कर जाता हैं (यानी) उन के गुनाह मिटा देता है।

— رواه ابو الشيخ عن ابى الدرداء رضى الله تعالىٰ عنه —

हदीस 54 सैय्यदना इमामे हसन मुजतबा — صلى الله تعالىٰ على جده الكريم وعليه وبارك وسلم — की हदीस में है..........

لَاَنْ اُطْعِمَ اَخًا لِّيْ فِي اللّٰهِ لُقْمَةً

बेशक मेरा अपने किसी दीनी भाई

Scanned by CamScanner

أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ أَنْ أَتَصَدَّقَ عَلَى مِسْكِينٍ بِدِرْهَمٍ وَلَأَنْ أُعْطِيَ أَخًا لِيْ فِي اللّٰهِ دِرْهَمًا أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ أَنْ أَتَصَدَّقَ عَلَى مِسْكِينٍ بِمِائَةِ دِرْهَمٍ

को एक निवाला खिलाना मुझे इस से ज़्यादा पसंद है के मिस्कीन (फ़क़ीर) को एक रूपया दूँ, और अपने दीनी भाई को एक रूपया देना मुझे इस से ज़्यादा प्यारा है के फ़क़ीर को सौ रूपये ख़ैरात करूँ ।

—— رواه ابو الشيخ فى الثواب عنه عن جده صلى الله تعالى عليه وسلم ولعل الاظهر وقفه كالذى يليه ——

हदीस 55 सैय्यदना अमीरूल मोमेनीन मौलल मुसलेमीन अ़ली मुरतज़ा-كرم الله تعالى وجهه الاسنى——फ़रमाते हैं.........

لَأَنْ أَجْمَعَ نَفَرًا مِّنْ إِخْوَانِيْ عَلَى صَاعٍ أَوْ صَاعَيْنِ مِنْ طَعَامٍ أَحَبُّ إِلَىَّ مِنْ أَنْ أَدْخُلَ سُوْقَكُمْ فَأَشْتَرِيْ رَقَبَةً فَأُعْتِقَهَا ——

मैं अपने चन्द दीनी भाईयों को तीन सेर या छे सेर खाने पर इक्ठ्ठा करूँ तो येह मुझे उस से ज़्यादा महबूब है के तुम्हारे बाज़ार में जाऊँ और एक ग़ुलाम ख़रीद कर आज़ाद करूँ ।

हदीस 56 के सहाबा-رضى الله تعالى عنهم—ने (हुज़ूर से) अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह हम खाते हैं और सेर नहीं होते (यानी भूक ख़त्म नहीं होती) फ़रमाया----इक्ठ्ठे हो कर खाते हो या अलग अलग ? अ़र्ज़ की अलग अलग फ़रमाया-------------------

—— اِجْتَمِعُوْا عَلَى طَعَامِكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ يُبَارَكْ لَكُمْ فِيْهِ ——

जमा हो कर खाओं और अल्लाह तआ़ला का नाम लो, तुम्हारे लिए उसी में बरकत रखी जाएगी ।

رواه ابو داؤد و ابنا ماجة وحبان عن وحشى بن حرب رضى الله تعالى عنه-

हदीस 57 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم---------

—— كُلُوْا جَمِيْعًا وَلَا تَفَرَّقُوْا فَإِنَّ الْبَرَكَةَ مَعَ الْجَمَاعَةِ ——

मिल कर खाओ और जुदा न हो के बरकत जमाअत के साथ है ।

—رواه ابن ماجة والعسكرى فى المواعظ عن امير المومنين عمر رضى الله عنه بسند حسن

हदीस 58 के फ़रमाते हैं हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

اَلْبَرَكَةُ فِىْ ثَلٰثَةٍ فِى الْجَمَاعَةِ وَالثَّرِيْدِ وَالسُّحُوْرِ

बरकत तीन चीज़ो में हैं ① मुसलमानों के इजतेमाअ़ और ② सरीद खाने में (अ़रब का एक ख़ास पकवान) और ③ सेहरी में ।

رواه الطبرانی فی الکبیر والبیھقی فی الشعب عن سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ

हदीस 59 के फ़रमाते हैं हुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم طَعَامُ الْوَاحِدِ

يَكْفِى الْاِثْنَيْنِ وَطَعَامُ الْاِثْنَيْنِ يَكْفِى الْاَرْبَعَةَ وَيَدُ اللّٰهِ عَلَى الْجَمَاعَةِ

एक आदमी की ख़ूराक दो आदमी को काफ़ी हैं और दो आदमी की ख़ूराक चार को, अल्लाह तआ़ला का हाथ (यानी रहमत व बरकत) जमाअ़त पर है । — رواه البزار عن سمرة رضی اللہ تعالیٰ عنہ —

हदीस 60 के फ़रमाते हैं हुज़ूर— صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

اِنَّ اَحَبَّ الطَّعَامِ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى مَا كَثُرَتْ عَلَيْهِ الْاَيْدِىْ

बेशक सब खानों में ज़्यादा प्यारा अल्लाह عزوجل को वोह खाना हैं जिस पर हाथ बहुत से हो (यानी जितने आदमी ज़्यादा मिल कर खाएगे उतना ही अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा पसंद होंगा)

رواه ابو یعلیٰ والطبرانی وابو الشیخ عن جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ

—: इन हदीसों से साबित हुआ के :—

जो मुसलमान इस अमल में नेक नीयत पाक माल से शरीक होंगे, उन्हें करमे ईलाही व इन्आमे हज़रत रिसालते पनाही — تعالیٰ ربہ وتکرم — وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से 25 फ़ायदे मिलने की उम्मीद हैं.......

1. अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो बुरी मौत से बचेगे ।
2. उ़मरे ज़्यादा होंगी ।
3. उन की गिन्ती बड़ेगी ।

● येह तीन फ़ायदे ख़ास वबा के दूर करने से मुतअ़ल्लिक़ गुज़री ।

Scanned by CamScanner

4 रिज़्क़ में बरकत होंगी, माल ख़ूब ज़्यादा बड़ेगा । इसकी आदत से कभी मोहताज न होंगे ।

5 ख़ैर व बरकत पाएगे । येह दोनों फ़ायदे क़हेत के दूर करने से मुतअल्लिक़ हैं ।

6 आफ़ते बलाएँ दूर होंगी, बुरी मौत टलेगी, सत्तर दरवाज़े बुराई के बन्द होंगे, सत्तर क़िस्म की बला दूर होंगी ।

7 उन के शहर आबाद होंगे ।

8 बद हली दूर होंगी ।

9 खौफ व अन्देशा खत्म होंगा और इत्मीनान हासिल होगा ।

10 मद्दे ईलाही शामिले हाल होगी ।

11 रहमते ईलाही उन के लिए वाजिब होगी ।

12 फ़रिश्ते उन पर दुरूद भेजेंगे ।

13 हर काम में अल्लाह की मरज़ी शामिल रहेगी ।

14 ग़ज़बे ईलाही उन पर से ख़त्म होगा ।

15 उन के गुनाह बख़्शे जाएगे, मग़फ़ेरत उन के लिए वाजिब होगी, उन के गुनाहों की आग बुझ जाएगी ।

——येह दस फ़ायदे क़हेत व वबा और हर तरह की बीमारियों व बला व क़ज़ाए हाजात व बरकात व सआदत को मुफ़ीद हैं ।

16 दीनदार लोगों की ख़िदमत में सदक़ा से बड़ कर सवाब पाएँगे ।

17 ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा सवाब लेगे ।

18 उनके टेड़े काम दुरूस्त होगें ।

19 आपस में मुहब्बते बड़ेगी जो हर ख़ैर व भलाई की जड़ हैं ।

20 थोड़े से ख़र्च में बहुत का पेट भरेगा के तन्हा खाते तो ड़बल लगता ।

21 अल्लाह عزوجل के हुज़ूर दरजे बूलन्द होगे ।

22 मौला तबारक व तआला फ़रिश्तों से उन के साथ फ़ख़्र फ़रमाएगा ।

23 रोज़े क़ियामत दोज़ख़ से अमान (हिफ़ाज़त) में रहेंगे । जहन्नम की आग उन पर हराम होगी

24 आख़िरत में एहसाने ईलाही से बेहरामन्द (फ़ैज़ियाब) होगे ।

25 ख़ुदा ने चाहा तो उस मुबारक गिरोह में होंगे जो हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे अलाम सरवरे अकरम —صلى الله تعالى عليه وسلم की नलैने मुक़द्दस के

Scanned by CamScanner

→ सदक़े में सब से पहले दाख़िले जन्नत होगा ।

!اَللّٰهُ اَكْبَر अल्लाहु अकबर ! ग़ौर कीजिये–ﷺ कैसा ख़ूबसूरत हसीन मुकम्मल शिफ़ा देने वाला, नुसख़ा हैं के एक अमल और इस क़द्र नफ़ा देने वाला । —— وَفَضْلُ اللّٰهِ اَوْسَعُ وَاَكْبَرُ وَاَطْيَبُ وَاَكْثَرُ

(और अल्लाह का फ़ज़्ल तो बहुत फैला हुआ हैं और बहुत बड़ा और बहुत ख़ूब और बहुत ज़्यादा है)

ओलमा तो शिफ़ा हासिल करने और बला को दूर करने के लिए मुख़्तलिफ़ चीज़ों को जमा फ़रमाते हैं, के अपनी बीबी को उस का महर पूरा या कुछ दे वोह उस में से कुछ ख़ूश दीली से उसे दे उन रूपयों का शहेद व ज़ैतून का तेल ख़रीदे और कुछ क़ुरआन की आयते ख़ास कर सूरए फ़ातिहा और आयाते शिफ़ा रिकाबी में लिख कर बारिश के पानी और अगर न मिले तो बहते दरया के पानी से धोए और कुछ ज़ैतून का तेल व शहेद मिला कर पिये (अल्लाह ने चहा तो) हर बीमारी से शिफ़ा पाएँ के उसने दो शिफ़ाएँ क़ुरआन व शहेद, दो बरकते बारिश का पानी व ज़ैतून और ख़ूशी से महर से दी हुई रक़्म, पाँच चीज़ें जमा की ।

(1) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैं.........................

—— نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ——

तरजमाः- यानी हम उतारते हैं क़ुरआन से वोह चीज़ के शिफ़ा व रहमत हैं ईमान वालों के लिए ।

(2) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैं.........................

—— فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ——

तरजमा :- शहेद में शिफ़ा हैं लोगों के लिए ।

(3) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैं.........................

—— وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا ——

तरजमा :- और उतारा हम ने आसमान से बरकत वाला पानी ।

(4) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैं.........................

—— شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ ——

तरजमा :- मुबारक पेड़ ज़ैतून का ।

(5) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है.........................

Scanned by CamScanner

فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا

तरजमा :- फिर अगर औरतें अपने जी की ख़ूशी के साथ तुम्हें महर में से कुछ देदें तो उसे खाओ रचता पचता ।

इन मुबारक तरक़िबों की तरफ़ हज़रत अमीरूल मोमेनीन मौलल मुस्लेमीन अली मुरतज़ा शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा كرم الله تعالى وجهه الاسنى व हज़रत सैय्यदना औफ़ बिन मालिक अश्जई رضى الله تعالى عنه ने हिदायत फ़रमाई------इब्ने अबी हातिम अपनी तफ़्सीर में हज़रत मौला अली رضى الله تعالى عنه से सही सनद के साथ रिवायत करते है के उन्हों फ़रमाया.....................................

إِذَا اشْتَكَى أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَوْهِبْ مِنِ امْرَأَتِهِ مِنْ صَدَاقِهَا دِرْهَمًا فَلْيَشْتَرِ بِهِ عَسَلًا ثُمَّ يَأْخُذُ مَاءَ السَّمَاءِ فَيَجْمَعُ هَنِيئًا مَرِيئًا مُبَارَكًا

जब तुम में से कोई बीमार हो तो उसे चाहिये अपनी औरत से उस के महर में से एक दिरहम (चान्दी का सिक्का) ले उस का शहेद मोल ले फिर आसमान का पानी ले कर रचता पचता बरकत वाला जमा करेगा ।

और एक बार फ़रमाया......................................

إِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمُ الشِّفَاءَ فَلْيَكْتُبْ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ فِي صَحْفَةٍ وَلْيَغْسِلْهَا بِمَاءِ السَّمَاءِ وَلْيَأْخُذْ مِنِ امْرَأَتِهِ دِرْهَمًا عَنْ طِيبِ نَفْسِهَا فَلْيَشْتَرِ بِهِ عَسَلًا فَلْيَشْرَبْهُ فَإِنَّهُ شِفَاءٌ

जब तुम में कोई शख़्स शिफ़ा चाहे तो क़ुरआने अज़ीम की कोई आयत रिकाबी में लिखे और बारिश के पानी से धोए और अपनी औरत से एक दिरहम (चान्दी का सिक्का) उस की ख़ूशी से ले और उस का शहेद ख़रीद कर पिए के बेशक शिफ़ा (उस में) है ।

अल्लामा ज़रक़ानी शरहे मुवाहिब में फ़रमाते हैं.........

مَرِضَ عَوْفُ بْنُ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيُّ الصَّحَابِيُّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ فَقَالَ

औफ़ बिन अश्जई सहाबी رضى الله عنه बीमार हुए, फ़रमाया पानी लाओ

أتُونِي بِمَاءٍ فَإِنَّ اللهَ تَعَالٰى يَقُولُ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا ثُمَّ قَالَ ائْتُونِي بِعَسَلٍ وَتَلَا الْآيَةَ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ثُمَّ قَالَ ائْتُونِي بِزَيْتٍ وَتَلَا مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ نَخْلِطُ ذٰلِكَ بَعْضَهُ بِبَعْضٍ وَشَرِبَهُ فَعُوفِيَ-

के अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैं हम ने उतारा आसमान से बरकत वाला पानी , फिर फ़रमाया शहेद लाओ और आयत पढ़ी के इस में शिफ़ा हैं लोगों के लिए, फिर फ़रमाया---- ज़ैतून का तेल लाओ और आयत पंढ़ी के बरकत वाले पेढ़ से, फिर उन सब को मिला कर पी लिया, और शिफ़ा पाई ।

जब मुख़्तलिफ़ चीज़ों का जमा करना जाइज़ व फ़ायदे मन्द हैं तो येह एक ही दवा सब ख़ुबियों की जामे (नीचोड़) हैं इस का मुकम्मल सुबूत इमामे अजल हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मुबारक जो शागिर्द है हज़रत इमामुल अइम्मा इमामे अज़म अबू हनीफ़ा رضي الله تعالى عنهما के उन्हों ने ख़्वाब में हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुल मुर्सलीन रहमतुलल्लि आ़लामीन صلى الله تعالى عليه وسلم से सुना ।

अ़ली बिन हुसैन बिन शक़ीक़ कहते हैं---------मेरे सामने एक शख़्स ने इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمة الله تعالى عليه — से अ़र्ज़ की---अए अबू अ़ब्दुर्रहमान सात बरस से मेरे एक ज़ानू (रान) में फोड़ा हैं क़िस्म क़िस्म के ईलाज किये कई हकीमों से मिला कुछ फ़ायदा न हुआ, फ़रमाया.....................................

إِذْهَبْ فَانْظُرْ مَوْضِعًا يَحْتَاجُ النَّاسُ الْمَاءَ فِيهِ فَاحْفِرْ هُنَاكَ بِئْرًا فَإِنِّي أَرْجُوْ أَنْ تَنْبَعَ لَكَ هُنَاكَ عَيْنٌ وَيُمْسِكُ عَنْكَ الدَّمُ فَفَعَلَ الرَّجُلُ فَبَرَأَ ———

जा ऐसी जगह देख जहाँ लोगों को पानी की ज़रूरत हो वहाँ एक कुआँ खोद और (करामत के तौर पर येह भी) इरशाद फ़रमाया -----के मैं उम्मीद करता हूँ के वहाँ तेरे लिए एक पानी का चश्मा निकलेगा और तेरा येह (फोड़े से) ख़ून बहना थम जाएगा, उस शख़्स ने ऐसा ही किया

और अच्छा हो गाया ।

رواه الامام البيهقي عن علي قال سمعت ابن المبارك وسئله رجل فذكره-

इमाम बहयक़ी फ़रमाते हैं-----------इसी तरह हमारे उस्ताद इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह हाकिम (साहिबे मुस्तदरीक) की हिकायत है------के उन के मुँह पर फोड़े निकले तरह तरह के ईलाज किए,न गए, क़रीब एक साल के इसी हाल में गुज़रा उन्हों ने एक जुम्अ़ को इमाम अबू उ़समान साबूनी رحمة الله تعالى عليه से उन की मजलिस में दुआ की दरख़्वास्त की, इमाम ने दुआ फ़रमाई और हाज़रीन ने ख़ूब ख़ूब आमीन कही दूसरा जुम्अ़ हुआ किसी बीबी ने एक रूक्का (कागज़ का टूकड़ा) मजलिस में ड़ाल दिया उस में लिखा था---के मैं अपने घर पलट कर गई और रात को इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह हाकिम के लिए दुआ में कोशिश की, ख़्वाब में हुज़ूर रहमते आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم के जमाले जहॉ आरा (चेहरे मुबारक) की ज़ियारत से मुर्शरफ़ हुई गोया हुज़ूर मुझे इरशाद फ़रमाते हैं قولي لابي عبد الله يوسع الماء على المسلمين- अबू अ़ब्दुल्लाह से कह मुसलमानों को पानी पिलाए------- इमाम बयहक़ी फ़रमाते हैं----मैं वोह रूक्का (कागज़) अपने उस्ताद अबू अ़ब्दुल्लाह हाकिम के पास ले गया उन्हों ने अपने दरवाज़े पर एक पानी का हवोज़ बनाने का हुक्म दिया, जब बन चुका उस में पानी भरवाया और बरफ़ ड़ाली और लोगों ने पीना शुरू किया (अभी) एक हफ़्ता न गुज़रा था के शिफ़ा ज़ाहिर हुई, फोड़े जाते रहे, चेहरह उस अच्छे से अच्छे हाल पर हो गया जैसा कभी न था, उस के बाद बरसों ज़िंदा रहे ।

मुसलमानों को चाहिये इस पाक मुबारक अमल पर चन्द बातों की एहतियात वाजिब जाने के इन अ़ज़ीम फ़ायदों से दुनिया व आख़िरत में कामयाब हो ।

1 नियत दुरूस्त रखना के आदमी की जैसी नियत होती है वैसा ही फल पाता है, नेक काम किया और नियत बुरी, तो वोह कुछ काम का नहीं,- إنما الاعمال بالنيات (यानी आ़माल का मदार नियतों पर है) तो लाज़िम के रिया (दिखावे) या नाम वरी वग़ैरा जैसे बुरे मक़सदों

को हरगिज़ दख़्ल न दे वरना नफ़ा तो दूर नुक़सान के हक़ दार होंगे ।

2 सिर्फ़ अपने सर से बला टलने की नियत न करें के जिस नेक काम में चन्द तरह के अच्छे मक़सद हो और आदमी उन में एक ही नियत करे तो उसी के लायक़ फल का हक़ दार होगा । اِنَّمَا لِکُلِّ امْرِءٍ مَّا نَوٰی (यानी हर आदमी के लिए वही मिलता है जिस की उस ने नियत की) जब काम कुछ बड़ता नहीं सिर्फ़ नियत कर लेने में एक नेक काम के दस हो जाते हैं, तो एक ही नियत करना कैसी बेवक़ूफ़ी और बिला वजह अपना नुक़सान है, हम उपर इशारह कर आए के इस अ़मल मे कितनी नेकियों की नियत हो सकती है, इन सब का इरादा करे के सब के सब नफ़ा पाएँ, बल्कि हक़ीक़त में इस अ़मल से बला टलना भी इन्हीं नियतों का फल है जैसा के हम ने हदीसों से रौशन कर दिया, तो बग़ैर इन नियतों के सदक़ा, फ़क़ीरों व नेकों की ख़िदमत व रिश्ता चोड़ना व पड़ोसी वग़ैरा के बला टलने की खाली नियत बे गुदे का छिलका है (यानी बेकार है)

3 अपने मालों की पाकी में बहूत ज़्यादा हद तक कोशिश करना के इस काम में पाक ही माल लगाया जाए, अल्लाह عزوجل पाक है पाक ही को क़ुबूल फ़रमाता है ।

ना पाक माल वालों को येह रोना क्या थोड़ा है के उनके सदक़े ख़ैरात फ़ातिह नियाज़ कुछ क़ुबूल नहीं---------- والعیاذ باللہ تعالٰی

4 हरगिज़ हरगिज़ ऐसा न करें के खाते पितों को बुलाए, मोहताजों को छोड़ें के ज़्यादा हक़ दार वही हैं और उन्हें इसकी ज़रूरत है तो उन का छोड़ना उन्हें तकलीफ़ देना और दिल दुखाना है, मुसलमान की दिल शिकनी (दिल दुखाना)—— معاذ اللہ वोह अ़ज़ीम बला है के सारे अमल को ख़ाक कर देगी ऐसे खाने को हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने सब से बदतर खाना फ़रमाया के पेट भरे बुलाए जाएँ —— जिन्हें परवाह नहीं और भूके छोड़ दिये जाएँ जो आना चाहते है– مسلم

عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم شر الطعام طعام الولیمۃ یمنعھا من یاتیھا ویدعی الیھا من

يَا بَا هَا وللطبرانی فی الکبیر والدیلمی فی مسند الفردوس بسند حسن عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بلفظ "یدعی الیہ الشبعان ویحبس عنہ الجائع وفی الباب غیرھا۔

(यानी हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ تعالیٰ عنہ रिवायत करते हैं,--- रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया "सब से बुरा वलीमे का वोह खाना है जिस में अमीरों को बुलाया जाए और ग़रीबों को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए")

5 ग़रीब जो आएँ उन की इज़्ज़त व ख़ातिर दारी में बेहतर कोशिश करें, अपना एहसान उन पर न रखें बल्कि आने में उनका एहसान अपने उपर जाने क़े वोह अपना रिज़्क़ खाते हैं और तुम्हारे गुनाह मिटाते है, उठाने बिठाने, बुलाने खिलाने किसी बात में बरताओ ऐसा न करे जिस से उनका दिल दुखे के एहसान जताने, तकलीफ़ देने से सदक़ा बिल्कुल अकारत जाता है ।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैं.....................

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ۔ الآیۃ

जो लोग ख़र्च करते हैं अपने माल ख़ुदा की राह में फिर अपने दिये के पीछे न एहसान रखें न दिल दुखाएँ उन के लिए सवाब है, अपने रब के पास और येह उन पर ख़ौफ़ और न ग़म खाएँ, अच्छी बात (के हाथ न पहुँचा तो मीठी ज़बान से साइल को फेर दिया) और दरगुज़र (के फ़क़ीर ने ना हक़ हट या कोई ग़लत हरकत की तो उस पर ख़्याल न किया उसे दुख न दिया,येह उस ख़ैरात से) बेहतर है जिस के पीछे दिल सताना हो, और अल्लाह बे परवाह है (के तुम्हारे सदक़े व ख़ैरात की परवाह नहीं रखता एहसान

Scanned by CamScanner

किस पर करते हो) हिल्म वाला है (के तुम्हें बे शुमार नेमाते दे कर तुम्हारी सख़्त सख़्त ना फ़रमानियों से दरगुज़र फ़रमाता है, तुम एक निवाला मोहताज को दे कर वजह बे वजह उसे तकलीफ़ देते हो) अए ईमान वालो ! अपनी ख़ैरात अकारत न करो एहसान रखने और दिल सताने से, उस की तरह जो माल ख़र्च करता है लोगों के दिखावे को (के उस का सदक़ा सिरे से अकारत है)والعیاذ باللہ

इन सब बातों के लिहाज़ के साथ इस अ़मल को एक बार न करे बल्कि बार बार अ़मल में लाएँ (यानी बार बार खाना खिलाए) के जितनी ज़्यादा बार होगा उतना ही फ़क़ीरों व ग़रीबों को फ़ायदा होगा, उतना अपने लिए दीनी दुनियावी व जिस्मानी व जानी रहमत व बरकत व नेमत व सआ़दत होगी । ख़ास कर क़हेत के दिनों में तो जब तक (अल्लाह की पनाह) क़हेत रहे रोज़ाना ऐसा ही करना मुनासिब के उस में निहायत आसान तौर पर ग़रीबों व मोहताजों की ख़बर गीरी हो जाएगी अपने खाने में उन का खाना भी निकल जाएगा, (अनाज) देते हुए नफ़्स को मालूम भी न होगा और जमाअ़त की वजह से सौ का खाना दो सौ को कफ़ी होगा । हज़रत सैय्यदना अमीरूल मोमेनीन उमरे फ़ारूके आ़ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के ज़माने में क़हेत पड़ा था जिसे "क़हते आमुर्रमादह" क़हते है उस में आप ने भी ऐसा ही किया था ।— وباللہ التوفیق وھدایۃ الطریق —

— الحمد للہ (तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए) के येह बेहतरीन व ला जवाब रिसाला दस रबीउल आख़िर के तीन जलसों में तमाम हुआ------ और तरीख़ के लिहाज़ से

— رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ —

١٣١٢ ھ

नाम हुआ ।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَاللّٰہُ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ وَعِلْمُہٗ جَلَّ مَجْدُہٗ اَتَمُّ وَاَحْکَمُ -

आला हज़रत की चन्द नायाब किताबें अब हिन्दी में भी,

आज ही लीजिये

तबर्रूकात के अदाब व फज़ाएल 8/-

निदा-ए-या रसूलुल्लाह 7/-

दावते चेहलुम 6/-

खेज़ाब सबबे अज़ाब 6/-

शफाअते मुस्तफा 6/-

फारिश्तों की मौत व हयात 5/-

रूहों का आना 5/-

अज़ाने कब्र 8/-

रसूल का इल्मे गैब 8/-

नजात नमा 6/-

मेहमान नवाज़ी के फज़ाइल 6/-

अहकामे तस्वीर 7/-

हुकूके वालदैन 8/-

हुज़ूर के वालदैन 8/-

तमहीदे ईमान 8/-

करीन-ए-ज़िन्दगी

लेखक :- मुहम्मद फारूक खॉ अशरफी रज़वी

(तीसरा एडीशन)

Rs. 30/-

अब उर्दू में भी आ रही है

Scanned by CamScanner